IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# दशनामी अखाड़े एवं कुंभ मेला

**शोधार्थी**
**पुनवासी गिरि**
**इतिहास विभाग**
**एन०ए०एस० (पी०जी०) कॉलेज, मेरठ**

**सारांश**

अखाड़ों का सांस्कृतिक इतिहास बिना कुंभ मेला के पूर्ण नही हो सकता कुंभ मेले व अखाड़े एक दूसरे के पूरक है। कुंभ एवं अर्द्ध–कुंभ मेलों में अखाड़े ही सबसे बड़े आकर्षण के केन्द्र होते है तथा देश–विदेश के श्रद्धालु व पर्यटक लाखों की संख्या में उस घड़ी की प्रतिक्षा करते हैं जब पूरी आन–बान और तड़क–भड़क के साथ अखाड़ों की शोभा–यात्रा शाही स्नान हेतु निकलती है। इसमें हाथी, ऊँट, घोड़े, पालकी आदि पर सवार होकर के गरिमा व परम्परा का निर्वाहन करते हुए उत्साह के साथ आगे–आगे चलते हैं। इनका समाज से पूरा लगाव रहता है। कुंभ मेलों के अवसर पर साधुओं एवं गृहस्थों के मध्य सर्वाधिक घनिष्ठ स्तर की सामाजिक धार्मिक अंतःक्रिया होती है। एक सामूहिक कर्म काण्ड के रूप में कुंभ मेला भारतीय संस्कृति में समाज एवं धार्मिक संस्थानों के मध्य स्थित मूलभूत अनुबंध की सांकेतिक अभिव्यक्ति है। अखाड़ों की रंग–विरंगी शोभा–यात्रा एवं शाही स्नान की परंपरा सामान्य जन के मध्य सामाजिक धार्मिक चेतना को उत्पन्न करने हेतु एक शक्तिशाली उत्प्रेरक का कार्य करती है तथा इस प्रकार समाज के मनोबल को बढ़ाती है।

जहाँ तक अखाड़ों का सम्बन्ध है, कुंभ मेला जो उनको अपना वैभव प्रदर्शित करने का एक मंच तो प्रदान करता ही है, साथ ही उन्हें अपने कर्म व दर्शन के प्रचार हेतु भी एक मंच प्रदान करता है।

**महत्वपूर्ण शब्द** – अखाड़े, कुंभ, नक्षत्र राशि, गृहस्थ, दशनामी, वैरागी, महंत, डिप्टी कलेक्टर, मजिस्ट्रेट, महामंडलेश्वर।

**प्रस्तावना** – शताब्दियों से चली आ रही महाकुंभ पर्व की अक्षुण्ण परंपरा भारतीय संस्कृति में निहित विराट **'ऐक्य भावना'** का प्रतीक रही है। समस्त धर्मो के मतावलम्बी संत, साधु–संन्यासी, दर्शनशास्त्र के महान अध्येता विद्वान बड़े–बड़े मठो के महंत एवं पीठाधीश्वर जहाँ एकत्र होते हैं, वही जनता के सभी वर्गो के धनी–निर्धन, छोटे–बड़े, राजा–रंक बड़े उत्साह के साथ उत्तर दक्षिण व पूरब–पश्चिम से एकत्र होते है, कुंभ पर्व ऐसा विराट महापर्व बन जाता है जिसकी रमणीयता स्वतः सिद्ध हो जाती है।

**उद्देश्य –**

दशनामी अखाड़े एवं कुंभ मेला का जनमानस के सांस्कृतिक व सामाजिक आर्थिक जीवन में हुए परिवर्तन का विश्लेषणकर सकारात्मक पक्ष को प्रस्तुत करना जिससे भावी जनमानस अपने दैनिक जीवन में आत्मसात करें।

**क्रियाविधि –**

- पौराणिक मान्यताएँ व पारंपरिक विधि
- दार्शनिक व वैज्ञानिक
- वैदिक व साहित्यिक।

**साहित्यालोकनः– दशनामी नागा संन्यासियों के प्रमुख स्थल**

| मठ | गोवर्धन पीठ | शारदापीठ | श्रृंगेरी पीठ | ज्योतिष पीठ |
|---|---|---|---|---|
| स्थान | पुरी (पूर्व) | द्वारिका (पश्चिम) | श्रृंगेरी (दक्षिण) | जोशीमठ (उत्तराखण्ड) |
| प्रथम आचार्य | पदमपाद् | विश्वस्वरूप या सुरेश्वरा चार्य | पृथ्वीधर अथवा हस्तामलक | त्रोटका चार्य |
| अधिकार क्षेत्र | अंग, वंग, कलिंग, मगध, उत्कल वीदर, बरार | सिन्धु, सौवीर सौराष्ट्र, राजपूताना पश्चिमी भारत | आन्ध्र, द्रविण कर्नाटक, केरल एवं महाराष्ट्र | कुरू, पंचाल पंजाब कश्मीर कम्बोज |
| सम्बद्ध शाखाये | वन और आरण्यक | तीर्थ एवं आश्रम | पुरी, भारती सरस्वती | गिरि, पर्वत व सागर |
| नवदीक्षित की उपाधि | प्रकाश | स्वरूप | चेतन | नन्द या आनन्द |
| वेद | ऋग्वेद | सामवेद | यजुर्वेद | अथर्ववेद |
| अंधिष्ठाता देवता | जगन्नाथ | सिद्धेश्वर | आदिवाराह | नारायण |
| देवी | विमला | भद्रकाली | कामाक्षी | पुष्यगिरि |
| तीर्थ नदी | महोदक्षि | गोमती | तुंगभद्रा | अलकनन्दा |
| सिद्धान्त अथवा महावाक्य | प्रधान ब्रह्म (ब्रह्मपूर्णज्ञान) | तत्वमसि तुमवह हो) | अहंब्रह्मस्मि मैं ब्रहमा हूँ | अयमात्मा ब्रह्मम यह आत्याही ब्रहम है। |
| गोत्र | कश्यप या अव्यय | अग्नि या अविगत | भूर्भूवः | भृगु |
| मंदिर क्षेत्र | जगन्नाथपुरी | द्वारका | रामेश्वरम् | बद्रिकाश्रम |
| उपाधि के अनुसार उपनिषद का स्वाध्याय | वन ऐत्तरीय अरण्य, कौषितकि | तीर्थ, केन आश्रय छान्दोग्य | पुरी, कठ भारतीय तैतरीय सरस्वती | गिरि, मुडक पर्वत, सागर, मान्डूक्य |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| **प्रथाओं अथवा रिवाजों के अनुसार किये गये विभाग** | भोगवार वे जो सभी ऐहिक वस्तुओं के प्रति उदासीन हैं केवल उन्ही वस्तुओं का भोग करते हैं जो जीवन के लिए आवश्यक हैं। | **कोटवार**<br><br>जो बहुत अल्प मात्रा में भोजन का प्रयास करते हैं। | भूरिवार वे जो वन के उत्पादकों एवं जड़ी बूटियों पर ही जीवन व्यतीत करते हैं। | आनन्दवाद, जो भिक्षा नही लेते (मांगते) हैं स्वतन्त्रदान पर जीवन व्यतीत करते हैं। |

**कुंभ का उद्भव व प्राचीनता** – कुंभ की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। इसके उद्भव के विषय में अनेक कथाएं प्रचलित है। अमृत कुंभ का उल्लेख ऋग्वेद, (10/87/7: शुक्ल यजुर्वेद (19/89), सामवेद (6/3), अथर्ववेद (19/53/3, 4/34/7, 16/6/8), महाभारत (1/25), रामायण (3, 35/27–34), गरूण पुराण (1,240/26–28), स्कन्द पुराण (4(1) 50–55–125) आदि में मिलता है।

मान्यता यह भी है कि उच्च कोटि के विद्वान संत इन चारों स्थानों में नियमित अन्तराल पर एकत्र होकर धार्मिक ग्रंथों पर वाद–विवाद किया करते थे तथा एक दूसरे के अनुभवों का आदान–प्रदान किया करते थे। ऐसा विश्वास किया जाता है कि सामान्य गृहस्थ इस अवसर का लाभ उठाते हुए इन विद्वानों के वाद–विवाद को सुनते थे तथा पुण्य लाभ प्राप्त करते थे। कालान्तर में अखिल भारतीय स्तर की ये सभाएं धीरे–धीरे कुंभ मेलों में परिवर्तित हो गयी।

कुंभ मेलों की ज्योतिष शास्त्रीय व्याख्या भी की गई है। जिसके अनुसार ऐसा प्रतीत होता है कि कुंभ मेला कुंभ योग के समय धार्मिक स्नान से सम्बन्धित हैं। कुंभ योग के सही तिथि व समय को निश्चित करने के लिए सूर्य्र, चन्द्रमा, बृहस्पति तथा शनि आदि ग्रहों की स्थिति व उनके मेल को ध्यान में रखा जाता है। हरद्वार, प्रयाग, उज्जैन, नासिक में लगने वाले कुंभ के अवसर पर ग्रहों की स्थिति निम्न प्रकार रहती है –

1. जब बृहस्पति कुंभ राशि में एवं सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है तो हरिद्वार में कुंभ पर्व मनाया जाता है।
2. जब बृहस्पति मेष राशि में तथा सूर्य एवं चन्द्रमा माघ मास में मकर राशि में अमावश्या के दिन प्रवेश करते है तो प्रयाग में कुंभ पर्व मनाया जाता है।
3. जब सूर्य एवं बृहस्पति सिंह राशि में स्थित होते है तो नासिक में कुंभ पर्व मनाया जाता है।
4. जब बृहस्पति सिंह राशि में तथा सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है तो उज्जैन में कुंभ पर्व मनाया जाता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि कुंभ मेला सर्वप्रथम हरद्वार में प्रारंभ हुआ होगा, जब बारह वर्ष बाद बृहस्पति कुंभ राशि में स्थित होता है तथा सूर्य मेष राशि में स्थित होता है। इस तरह के खगोलीय संयोग की बात नारदीय पुराण (2,66/44) में कही गयी है। जिसके अनुसार यह गंगा स्नान हेतु एक पवित्र समय होता है। आगे चलकर प्रयाग, उज्जैन तथा नासिक में भी यह पर्व–मनाया जाने लगा।

प्रयाग में माघ महीने गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम पर स्नान करने की परंपरा बड़ी पुरानी है। **ऋग्वेद** में कहा गया है कि –

**सितासिते सरिते यत्र संग्ङ्मे तत्राप्लुतासो दिवमुत्पतन्ति।**
**ये वै तन्वं विसृजन्ति धीरास्ते जनास्ते अमृतत्वं भजन्ते।।**

अर्थात् जिनके जल श्वेत और श्याम वर्ण के हैं, जहाँ गंगा और यमुना मिलती है, उस प्रयाग संगम में स्नान करने वालो को स्वर्ग लोक प्राप्ति होती है। जो धीर पुरूष वहाँ शरीर त्याग करते हैं, उन्हें अमृतत्व अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति होती है।

कुंभ मेला कब से प्रारम्भ हुआ इसके विषय में निश्चित रूप से कुछ नही कहा जा सकता। कुंभ का उल्लेख वेदों, पुराणों तथा महाकाव्यों में हुआ है किन्तु कुंभ मेला का उल्लेख कहीं नही हुआ है, इस विषय में सभी–धर्मग्रंथ मौन है।

सातवीं शताब्दी में भारत आये चीनी यात्री ह्वेनसांग, जो भारत में 629 ई० से 645 ई० तक रहा, ने प्रयाग में गंगा के किनारे हर्ष द्वारा आयोजित पंचवर्षीय सभा की बात की है।

कुंभ का ऐतिहासिक सम्बन्ध भगवत्पाद आद्य शंकराचार्य के साथ भी जोड़ा जाता है। शंकराचार्य के समय से कुंभ मेला का महत्व बहुत बढ़ गया। साधु संत इन मेलों में पूरे देश से एकत्र होकर धर्म एवं समाज की उन्नति हेतु उसमें आवश्यक सुधार करने की चर्चा करते थे। शंकराचार्य का दशनामी सम्प्रदाय तथा आगे चलकर दशनामी अखाड़े इस मेले में सबसे बड़े आकर्षण का केन्द्र बन गए। भारत के चारों कोनों के शंकराचार्यो ने भारत के धार्मिक जीवन की दशा और दिशा के निर्धारण में पिछले बारह सौ वर्षो में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

**दषनामी एवं अन्य अखाड़ों का कुंभ मेले में अवतरण – भूमि आवंटन एंव ध्वजारोहण के साथ प्रवेश**

विभिन्न सम्प्रदाय के अखाड़ों में दशनामी नागा संन्यासियों के अखाड़े सबसे प्राचीन है। कुंभ मेलों में दशनामी अखाड़ों का आगमन कब से प्रारम्भ हुआ, इस विषय में ऐतिहासिक सामग्री की उपलब्धता कम है। सर्वप्रथम **1266** ई० में कुंभ के अवसर पर दशनामियों के महानिर्वाणी अखाड़ा तथा वैरागियों के बीच युद्ध का हमें संक्षिप्त विवरण मिलता है। जिसमें वैरागियों की पराजय हो गयी थी। इसके उपरान्त **1398** ई० में तैमूर ने हरिद्वार कुंभ के अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं का नरसंहार कराया था। पारंपरिक इतिहास से पता चलता है कि बंगाल के चैतन्य महाप्रभु ने **1514** ई० के प्रयांग कुंभ में भाग लिया था। कबीर दास ने भी संभवतः दशनामी नागा संन्यासियों की शोभा–यात्रा का दिग्दर्शन किसी कुंभ पर्व के अवसर पर किया था। **दविस्तान–ए–मजाहिब** के लेखक फानी ने हरिद्वार कुंभ के अवसर पर **1640** ई० में मुंडी व संन्यासियों के बीच संघर्ष का वर्णन किया है जिसमें बड़ी संख या में मुंडीहताहत हुए। पंद्रहवीं शताब्दी के गंगाधर सरस्वती ने मराठी भाषा में लिखी अपनी पुस्तक **'गुरूचरित'** (3,50.33, 99) में नासिक में सिंहस्थ मेले का उल्लेख किया है। **1760** ई० में ढ़ोकल गिरि

के नेतृत्व में हरिद्वार कुंभ के अवसर पर 18000 वैरागियों को हताहत कर दिया था। **1789** ई० नासिक कुंभ के अवसर पर संन्यासियों एवं वैरागियों में पुनः संघर्ष हुआ जिसमें **12,000** साघु हताहत हुए। मरने वालों में वैष्णव वैरागियों की संख्या अधिक है। कुंभ एवं अर्द्धकुंभ के अवसर पर आने वाले लाखों श्रद्धालु नागाओं से भयभीत रहते है और उन्हें छेड़ने का साहस नही करते है। यही भय नागाओं के प्रति अतीव श्रद्धा में परिवर्तित हो जाता है एवं लोग अन्य सम्प्रदाय के साधुओं की अपेक्षा नागाओं का अधिक आदर व सम्मान करते है।

विभिन्न सम्प्रदाओं व अखाड़ो, को कुंभ मेला ने ऐसा मंच प्रदान किया जहाँ बैठकर वे पुरानी बातों को भूलकर आपसी सौहार्द व प्रेम से अपनी दार्शनिक समस्याओं को सुलझा सके। इसका सकारात्मक परिणाम आधुनिक काल में **'अखाडा परिषद'** की स्थापना में देखा जा सकता है। यह परिषद अखाडों के आपसी ताल–मेल बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अखाडों के लिए कुंभ मेला धार्मिक दृष्टि से ही नही अपितु राजनीतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। अखाड़े पंचायती संगठन है तथा प्रजातांत्रिक प्रणाली में विश्वास रखते है। इन विशाल संगठनों के सुचारू संचालन और व्यवस्था हेतु अनेक पदाधिकारी चुने जाते है। इन पदाधिकारियों का चुनाव सर्वसम्मति से कुंभ मेलों तथा अर्द्धकुंभ मेलों के अवसर पर ही किया जाता है। विभिन्न अखाड़ों में नए सदस्यों की दीक्षा प्रायः कुंभ अथवा अर्द्धकुंभ मेले के समय ही दी जाती है। इस अवसर पर अखाड़ों के महामण्डलेश्वर नवागतों को संन्यास की दीक्षा देते है।

कुंभ के मेले के अवसर पर विभिन्न अखाडों द्वारा विशाल भंडारों का आयोजन होता है, ये भंडारे प्रेम एवं भाई–चारे का प्रतीक है। भोजन के समय साधु सन्त तथा भक्त जन पवित्र धर्म ग्रन्थों से श्लोकों का पाठ करतें हैं। अखाड़ों के पदाधिकारी भोजन के समय उचित ध्यान रखते हैं जिससे भण्डारा निर्विघ्न समाप्त हो सके। भंडारा पूर्ण होने पर पुनः विगुल बजता है तथा ऊँ नमः पार्वतीपतये हर–हर महादेव का उद्घोष होता है। कुछ अखाड़े कुम्भ के अवसर पर गरीबों को भोजन देने हेतु भी भण्डारे चलाते हैं अखाड़ों के भण्डारों में कोई भी श्रद्धालु प्रसाद पाने के अधिकारी होता है। कुछ स्थानों पर कई हजार साधु निमंत्रित होते हैं। भण्डारे का समय निश्चित होता है तथा उसके पूर्व पवित्र भोज्य पदार्थ तैयार रहता है। सभी महामण्डलेश्वर अपने सेवकों के साथ पधारकर नियत स्थान पर विराजते हैं तथा उनमें से कुछ प्रवचन भी करते हैं जिसे महन्तगण, कोठारी, आसनधारी और अन्य साधु ध्यानपूर्वक सुनते हैं। प्रवचन समाप्त होने पर महामण्डलेश्वरों के स्त्रोत पाठ, कपूर तथा फूल मालाओं से अर्चना की जाती है विगुल बजाया जाता है। इस मसय साधु–सन्तों द्वारा श्रीमद् भागवत गीता के श्री कृष्ण–अर्जुन संवाद में पुरूषोत्तम योग नाम का पंद्रहवाँ अध्याय का वाचन किया जाता है।

अखाड़ों द्वारा अपने विशाल पंडालों में महामण्डलेश्वरों के व्याख्यान का आयोजन किया जाता है। विद्वान महामण्डलेश्वर भारतीय षडदर्शन–सांख्ययोग न्याय वैशेषिक, मीमांसा, वेदांत की सुन्दर व्याख्या प्रस्तुत करते है। कभी–कभी विद्वानों में किसी दार्शनिक समस्या पर विवाद देखने को मिलता

है। दशनामी अखाडों से सम्बन्धित संत वेदांत, दर्शन, गीता तथा शैव सिद्धान्तों की व्याख्या करते है। वैष्णव सन्त अपने पण्डालों में राम चरितमानस की सुन्दर मार्मिक व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। नानक शाही अखाड़े उदासीन व निर्मल सिख धर्म व वेदान्त आदि पर व्याख्यान का आयोजन कराते हैं। सभी व्याख्याताओं का प्रयास रहता है कि वे सरल और सुरूचिपूर्ण भाषा में अपने विचारों को प्रस्तुत करें जिससे श्रोता–वर्ग जिनका एक बहुत बड़ा हिस्सा ग्रामीण वर्ग से निर्मित होता है उनके विचारों को भली–भाँति प्रकार से समझ सकें।

आधुनिक समय में साधु–सन्तो द्वारा धार्मिक विवादों को हल करने हेतु धर्म–महासभा का आयोजन भी कुंभ के अवसरों पर किया जाता है। इन सभाओं में अखाड़ों के संत सक्रिय भागीदारी निभाते है। देश के बहुमुखी विकास तथा मानव समुदाय के कल्याण हेतु **1956** ई० में **'भारत साधु समाज'** का गठन किया गया साधु सम्प्रदायों का प्रतिनिधित्व करने वाला सर्वाधिक प्रभावशाली संगठन है। 'भारत साधु समाज' का अधिवेशन कुंभ के अवसरों पर होता है। **1989** ई० में इलाहाबाद कुंभ के अवससर पर इसका महाधिवेशन **31** जनवरी से **4** फरवरी, **1990** ई० तक हुआ। इस अधिवेशन में अन्य सम्प्रदायों के साधु संतो के साथ–साथ सभी अखाड़ों के संतो और महामण्डलेश्वरों ने भाग लिया।

इस अधिवेशन में धर्म एवं धर्म स्थलों के संरक्षण, साधु मर्यादा का संरक्षण, आध्यात्मिक विकास एवं नैतिक शिक्षा, राष्ट्रीय एकता तथा आर्थिक विकास, समाज सुधार व सदाचार, गोरक्षा, रामजन्मभूमि मुक्ति, उग्रवादी तत्वों पर नियंत्रण, अश्लील प्रकाशनों पर प्रतिबन्ध, उत्पादित वस्तुओ पर देवी–देवताओं के प्रदर्शन पर रोक, देवताओं के नाम पर अश्लील फिल्मों पर प्रतिबन्ध, आणविक आयुधों पर प्रतिबन्ध, तीर्थ स्थानों में मद्य एवं मांसाहार पर रोक, धार्मिक ट्रस्ट कानून में संशोधन तथा भूमि हदबंदी की छूट आदि पर प्रस्ताव पारित हुए।

**निष्कर्ष** – कुंभ उत्सव भारतीय मेधा की श्रेष्ठतम उपलब्धि है। आध्यात्मिक मनोज्ञान से जुड़ा यह महापर्व अपने देश की सामाजिक, सांस्कृतिक, अवधारणाओं का साकार रूप है यह प्राचीनतम लोकपर्व, राष्ट्र के समन्वयात्मक सांस्कृतिक जीवन का व्यवहारिक आधार है। प्राचीन काल से ही दशनामी अखाड़े व कुंभ मेला की गौर गरिमा सराहनीय रही है। आधुनिक समय में अखाडों से नागा संन्यासियों से आम जनता का साक्षात्कार कुंभ के अवसरों पर ही हो पाता है। आज भी कुंभ एवं अर्द्धकुभ के अवसरों पर अखाड़े ही आकर्षण का प्रमुख केन्द्र होते है बिना नागाओं के शाही–स्नान का दृश्य देखे किसी भी श्रद्धालु भक्त की कुंभ यात्रा अधूरी सी प्रतीत होती है।

**सुझाव** – दशनामी अखाड़े व कुंभ महापर्व भारतीय सभ्यता व संस्कृति का मूलाधार है। कुंभ के जैसा विशालतम पर्व विश्व में कहीं नहीं होता जहाँ पर स्थान भाषा, वर्णभेद को मिटाकर अनेकता में एकता का संदेश मिलता है। अतः इस सभ्यता एंव संस्कृति को पुनर्जीवित रखने के लिए अखाड़ो व कुंभ पर्व की महत्वा व प्रासंगिकता निर्मल होनी चाहिए जिससे भावी मानव आत्मसात करके अपने जीवन में परमानन्द की अनुभूति करें।

# सन्दर्भ ग्रंथ


1ण त्पए ैनईी ;1993द्ध दृ श्ज्ञनउइी ३३३ण्श्ए च्हम 59ण

2ण श्रंहकपी बिंदकतं ंदक ैपदहीए श्रपजमदकतं दृ ष्जीम ज्तंकपजपवद व िज्ञीनउइीएष चंहम 239ण

3ण गौर, वेणीराम शर्मा – कुंभ 'पर्वमहात्म्य' (व्यास पुस्तकालय काशी, 1948), सुभाष राय (पूर्वोक्त) द्वारा पृष्ठ 47–48 पर उद्घृत

4ण गौड, आचार्य शिवदयाल – 'महाकुंभ पर्व' पंचवटी संदेश, 1 अप्रैल, 1986, पृष्ठ 6–7

5ण छमअपसए भ्ण्त्ण दृ क्पेजतपबज ळंमजजममत व िन्दपजमक च्तवअपदबमे व ि ।हतं ंदक ूंकीय ;ळवअमतदउमदज च्तमेए ।ससींइंक 1909द्धए टवस.2 ैंतदचनतए च्हम 254.255ण

6ण ळीनतलम ळण्ण ;1953द्ध प्दकपंद ैकीनेष्ए च्हम 182ण

7ण ेपंजपब तमेमंतबीमेए टवस 17 चंहम 209ण

8ण ठनतहींदज त्पबींतक ॅदकमतपदह ेबमजपबे व ित्ंउंदंदकप ेमबजय पद भ्पेजवतल व ित्मसपहपवदे टवस 22 ;छवण 4द्ध डंल 1983ए चंहम 274ण

9ण ळतेंए त्वइमतज स्मूपे ;1992द्ध ैकीने व िप्दकपंष्ए चंहम 165.166ण

10ण ैतांतए श्रंकनदंजी ;1950द्ध. ष। भ्पेजवतल व िक्मीदंउप छंल ैददलेंपेए चंहम 86ण

11ण ळपतपए ूउप ैकंदंदक दृ ैवबपमजल ंदक ैददलेंप ;क्मीतंकनदए 1976द्ध चंहम 44.45ण

12ण शर्म्रा, योगेन्द्र नाथ – 'भारती संस्कृति की विराटता का प्रतीक कुंभ मेला–, देखिए फखीर चन्द (संपादित) 'कुंभ व अन्य मेले', (प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, 1986) पृष्ठ 1

13ण त्रिपाठी, अशोक (2019) नागा संन्यासियों का इतिहास (प्रयाग राज के विशेष सन्दर्भ में), 30, थार्नहिल रोड, सिविल लाइन्स इलाहाबाद–1 पेज 252